ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

xk/kh dh ckf)d p:ruk ,o f'k{kk n'kZu

Mk0 vr:y d:ekj 'kDyk]
,lkfl,V izkQ:lj

वर्तमान देश संक्रमण काल से गुजर रहा है, जिसमें पुरानी मान्यताएँ समाप्त हो रही है या हो चुकी है और नयी मान्यताएँ सामने आ रही है। संसार तो परिवर्तनशील है। यह बात पाषाण काल से लेकर वर्तमान युग तक के मनुष्य के इतिहास को देखने से स्पष्ट होता है। मनुष्य की आर्थिक, राजनैतिक, भौगोलिक, सांस्कृतिक स्थितियाँ रहन–सहन, वेशभूषा, शिक्षा–समय और वातावरण के अनुसार बदलते रहे हैं। इस बदलाव में विभिन्न विध्न–बाधानाओं के होते हुए भी मानव हमेशा प्रगति के पथ पर अग्रसार रहा है। मानव जीवन की प्रगति शिक्षा के द्वारा ही सम्भव हो सकी है। शिक्षा सभ्यता की सीढ़ी हैं शिक्षा और मानव जीवन का अटूट सम्बन्ध प्राचीन काल से ही रहा है। भले ही समय–समय पर विभिन्न दार्शनिकों ने अपने दर्शन से प्रभावित कर शिक्षा को सामाजिक व्यवस्था के अनुरूप बनाने का प्रयास किया है। सुव्यवस्थित समाज के लिये शिक्षा एक महत्वपूर्ण घटक है। शिक्षा जगत जब भी अव्यवस्थित हुआ है महान शिक्षाविदों मनीषियों ने इसको दिशा दी है इसी श्रृंखला में महात्मा गाँधी का नाम अग्रणी है, जिन्होने अंग्रेजियत के अन्धानुकरण से दूषित हो रही शिक्षा प्रणाली को अपने शिक्षा–दर्शन के आलोक से प्रकाशित एवं परिष्कृत किया।

गाँधी का शिक्षा दर्शन रूढ़िवादी परिवेश से मुक्त था लेकिन अपने अतीत से हमेशा प्रेरित रहा। गाँधी नाम 'सत्य और प्रेम' की संयुक्त भावना का युगबोध है। इस दृष्टि से 'सत्य और अहिंसा एवं प्रेम'' उनकी बौद्धिक चेतना का अंग बन गये। यही सब उन्हें महामानव बना गये।

गाँधी ने सामाजिक जीवन में व्याप्त वर्ग विषमता के विनाश के लिये मार्क्सवादी पथ नहीं अपनाया क्योंकि संघर्ष के मार्ग में अहिंसा की मृत्यु अनुभव हुई वही दूसरी तरफ मार्क्सवादी दर्शन की व्यापकता भी अनुकूल अनुभव नहीं हुई। गांधी पूँजी के स्थान पर श्रम को महत्व देते थे। गाधी इस युग के सबसे महान व्यक्ति थे। मानव जीवन सम्बन्धित ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जिसमें उन्होंने कार्य न किया हो। शिक्षा के क्षेत्र में गाधी प्रासंगिकता को स्थापित करने के लिये उन व्यापक परिवर्तनों को समझना आवश्यक है जो पिछले कई दर्शकों में घटित हुये। बहुत से परिवर्तन स्वयं गाधी के जीवनकाल में हुये। अपने जीवन–काल में ही देश को राजनीति स्वतंत्रता दिलाने, समाज में अछूतों का उद्धार करने, वर्ग विहीन समाज का निर्माण करने संसार को सत्य–अहिंसा व प्रेम का पाठ पढ़ाने के लिये वे तब तक याद किये जायेंगे जब तक यह सभ्यता जीवित रहेगी। अगर गांधी को समग्रता में उचित ढंग से समझा जाय तो जीवन का कोई ऐसा क्षेत्र नहीं है जिसमें गांधी एक युगदृष्टा के रूप में स्थापित न हो। धर्म के मामले में गांधी अपने सम्पूर्ण व्यक्तित्व में धर्म निरपेक्ष थे साथ ही वे एक गहन धार्मिक व्यक्ति और आस्थावादी हिन्दू भी थे। गांधी ने बार–बार कहा है कि वे हिन्दू धर्म को मानते हैं किन्तु उनके धर्म में मन्दिर का आडम्बर, देवी–देवताओं को आडम्बरपूर्ण पूजा नहीं आती थी। '' मैं क्यों हिन्दू हूँ'' इस शीर्षक के लेख में वे लिखते हैं–

मैं वंशानुक्रम के प्रभाव पर विश्वास रखता हूँ। एक हिन्दू परिवार में जन्म लेने के कारण मैं हिन्दू हूँ, यदि मेरी नैतिक मान्यताओं या अध्यात्मिकता से हिन्दू धर्म का कोई मेल न होता तो मैं इसका परित्याग कर देता किन्तु परीक्षण करने के बाद मैं जितने धर्मो को जानता हूँ उन सबसे इसको सर्वाधिक सहिष्णु पाता हूँ। यह रूढ़ियों से युक्त है। किन्तु इसमें दूसरे

धर्मो का बहिष्कार नहीं है। अहिंसा सभी धर्मो में मान्य है किन्तु इसकी सर्वाधिक अभिव्यक्ति और प्रयोग हिन्दू धर्म में हुआ है।''

गाँधी के सिद्धान्त और उपदेश आज भी उतने ही आवश्यक है। आज भी उनकी नीतियों पर चलने की उतनी ही आवश्यकता है जितनी पहले थी। जो लोग उन्हें भारत की विकृत परिस्थितियों और भारत विभाजन का जिम्मेदार मानते हैं, वास्तव में उन्होने गांधी को ठीक से समझा नहीं है। वास्तविकता तो यह है कि वे भारत को एक आदर्श राष्ट्र बनाना चाहते थे। प्रत्येक भारतवासी को आत्मनिर्भर, स्वावलम्बी, कर्मनिष्ठा, अहिंसक और सत्यनिष्ठ बनाना चाहते थे ताकि प्रत्येक व्यक्ति एक नवीन परिवेश में जीवन निर्वाह करें, कहीं ईर्ष्या, द्वेष एवं बुराई न रहे। जैसी उनकी रामराज्य की परिकल्पना थी।

गाँधी का पूरा दर्शन नैतिकता की पक्की चट्टान पर आधारित है। वे जीवन भर नैतिक मूल्यों के लिये संघर्ष करते रहे। नैतिक मूल्यों का ह्रास आज जैसा है, वैसा कभी नही हुआ और उनका पुनरूत्थान गांधी जी की बुनियादी शिक्षा के द्वारा ही किया जा सकता है। गांधी ने जो जीवन शैली प्रतिपादित की वह सरल आकृत्रिम जीवन की थी। यह कहा जायेगा ओर कहा जाता है कि गांधी प्रगति के चक्र को उलटा घुमाना चाहते थे और उनके विचार आज विज्ञान, मशीनी और तकनीक के युग में उपयोगी नहीं है। पाश्चात्य जगत के अनेक वैज्ञानिक, विचारक आज विकेन्द्रीकृत, सरल, संयमित जीवन व्यवस्था के पक्ष में है, किन्तु स्वतंत्र रूप से निष्पक्ष भाव से यह बात तो निश्चित है या तो कोई विकल्प खोजना है या विनाश के गर्त में विलीन होना है सम्पूर्ण दुनियाँ में उदारवादी और कलयाण चेतना तत्व अपने आपको एक ऐसे धुँधले में खड़ा हुआ पा रहे हैं, जहाँ से आगे बढ़ने का रास्ता सफल नहीं दिखाई देता है। यह विचार जो सम्पूर्ण मानवता को कल्याण की दिशा देता है, आज के दौर में धूमिल सा हो गया है। शिक्षा एवं मानव कल्याण हेतु हमें गांधी के विचारों को जानना ही नहीं बल्कि आत्मसात करना होगा। हमें भारत में कैसी शिक्षा चाहिए, कैसा समाज चाहिए इसकी जितनी स्पष्ट दृष्टि महात्मा गांधी के पास है उतनी शायद किसी भी अन्य चिंतक के पास नहीं । मनुष्य में जो सम्पूर्णता गुप्ता रूप में विद्यमान है। उसे प्रत्यक्ष करना ही शिक्षा का उद्देश्य है। स्वामी विवेकानन्द का यह कथन शिक्षा के समग्र स्वरूप की बहुत सटीक व्याख्या प्रस्तुत कर देता है। मनुष्य में निहित सामर्थ्य को प्रकट करके उसको जीवन में सार्थक बना देना ही शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए शिक्षा को स्वतन्त्र तत्व उत्पन्न नहीं करती है बल्कि सुप्त तत्व को जगा देती है। हर्बट स्पेन्सर ने कहा था कि मनुष्यों को पूर्ण जीवन व्यतीत करने के लिए तैयार करना ही शिक्षा उद्देश्य है, हम यदि मनुष्य की मनुष्यता अथवा उसके व्यक्तित्व को चरित्र की संज्ञा देते हैं तो हम कह सकते है कि चरित्र निर्माण करना ही शिक्षा का उद्देश्य है।

जिस देश की शिक्षा जितनी अच्छी होगी वह समाज अथवा देश उतना ही श्रेष्ठ एवं सुरक्षित होगा। शिक्षा वस्तुतः समाज एवं राष्ट्र की सुरक्षा की गारण्टी है। शिक्षा के प्रति उदासीनता एवं उपेक्षाभाव बरतने वाले देश न कभी उन्नति कर सकते हैं और न दीर्घकाल तक स्वतंत्र ही रह सकते हैं। इसलिए शिक्षा के निर्धारण के लिये हमें अत्यन्त ही जागरूक एवं दूरदर्शी होना चाहिए । विचारणीय यह है कि शिक्षा एक ऐसी विचारधारा है जिसका प्रभाव कम से कम दो पीढ़ियों के बाद स्पष्ट होता है। हमारी आधुनिक शिक्षा पद्धति को लगभग 150 वर्ष पूर्व हमारे विदेशी शासकों ने अपने शासन प्रशासन का काम चलाने के लिये लागू किया था। उनके इसके निर्धारण के दो उद्देश्य थे– शासन सम्बन्धी कागजी कार्यवाही हेतु बाबू मिल सके और अग्रेंजी शिक्षा प्राप्त करने वाले व्यक्ति अपने आपको जनता का आदमी न समझकर शासक वर्ग का सदस्य समझेंगे । यानि वे बाहर से देखने में भारतीय हो परन्तु मन से अंग्रेज हों और अंग्रेजियत के गुलाम हों। फलतः इस शिक्षा पद्धति ने अंग्रेजों के मानस पुत्रों

को एक महत्वपूर्ण वर्ग तैयार कर दिया, जिनकी परम्परा आज भी अक्षुण्ण बनी हुयी है। लगभग पिछले पचास वर्षो से शिक्षा पद्धति को बदलने की बात चल रही है परन्तु ढाक के तीन पात ज्यों के त्यों बने हुये हैं। वहीं शिक्षा पद्धति हमारे देश को नव निर्माण में सहायक हो सकती है, जिसमें भारतीय भाषाओं के माध्यम से शिक्षा प्रदान की जाय जिसकी स्वरूप राष्ट्र हो जिसमें भारतीय परम्पराओं के प्रति आस्था उत्पन्न करने वाले पाठ्यक्रम निर्धारित किये गये हों, जो जन–सामान्य के अन्दर हों सबके लिये समान शिक्षा हो। वैबोण्ड के शब्दों में ''सर्वव्यापी शिक्षा के अभाव में व्यापक मताधिकार (लोकतंत्र) अभिशाप बन जाता है।'' व्यक्ति के निर्माण में शिक्षा का वही स्थान एंव महत्व है जो जीवन को संजीवनी शक्ति प्रदान करने के लिये प्राण–तत्व का महत्व होता है। हमारे शिक्षा जगत की स्थिति वस्तुतः विक्षुब्ध सागर के समान है, उसमें अमृत प्राप्त करने के लिए सार्वजनिक गम्भीर एवं श्रम साध्य विचार मंथन अपेक्षित है। आने वाले युग में आहट को पहचानने वाला विदेशी चिंतक मानता है कि अब गाँधी का ही युग आ रहा है उसे आना होगा या लाना होगा। मानव व मानवता की रक्षा करनी है तो गांधी को याद करना होगा, लेकिन दुर्भाग्य की बात है कि भारत की बुद्धिजीवी वर्ग अभी भी यह सवाल उठा रहा है कि क्या गांधी विचार प्रासंगिक है। इस जगह के लिये ही शायद कबीर दास जी ने लिखा है– ''कस्तूरी का मृग ज्यों, छिन–छिन ढूढें घास।''

आधुनिक शिक्षा का उद्देश्य है एक आत्मनिर्भर सुदृढ़, चरित्र सम्पन्न राष्ट्र का निर्माण करना। गाँधी का सम्पूर्ण जीवन ही इसी कार्य में समर्पित हो गया था उनके शिक्षा सम्बन्धी विचारों ने इस समय तक की सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली की बुराइयों, कमियों को उजागर करके एक नया दृष्टिकोण प्रदान किया था। गाँधी के शैक्षिक योगदान से सम्बन्धित शोध कार्यो की संख्या अनुमान से अधिक ही मिलती है। उनके द्वारा प्रतिपादित शिक्षा के उद्देश्य, प्राथमिक शिक्षा में उनके योगदान बेसिक शिक्षा शिक्षा के सम्पूर्ण प्रत्यय– शिक्षक, विद्यालय, शिक्षण विधि, शिक्षा की उपादेयता आदि पर अनेकों शोध कार्य हो चुके हैं।

आधुनिक शिक्षा नीति में गाँधीवादी शिक्षा दर्शन कहाँ तक प्रभावी है। गाँधीवादी शिक्षा दर्शन आज की शिक्षा में समाहित करना क्यों आवश्यक है। इस पर विचार करना होगा । संसार परिवर्तनशील है और दिन–प्रतिदिन शिक्षा नीति में बदलाव आ रहा है। विज्ञान की नित नई खोजें, इन्सान के दिल दिमाग को झकझोर रही हैं। तेजी से बदलती इस दुनिया में महात्मा गाँधी और उनके दर्शन के लिये क्या स्थान है ?

वर्तमान समय में गाँधी युग की आवश्यकता निरन्तर बढ़ती ही जा रही है और समय की मांग के अनुसार गाँधी युग को आना होगा या प्रयास के द्वारा उसे लाना होगा। मानव एवं मानवता की रक्षा हेतु गांधी को याद करना ही पड़ेगा। वैसे गांधी का शिक्षा दर्शन तत्कालीन समय के अनुरूप ही था किन्तु उनके सिद्धान्त व्यवहारिक एवं मानव प्रवृत्ति के अनुकूल थे उनमें स्थायित्व था इसीलिये आज भी उनके विचारों को न केवल विचारों तक ही बल्कि उन्हें व्यवहारिक स्वरूप प्रदान करने की आवश्यकता समझी जा रही है।

गाँधी के शैक्षिक विचारों का योगदान कहाँ तक एवं आज की शिक्षा में उनको लागू करना क्यों आवश्यक है आज देश में बढ़ती बेरोजगारी, शिक्षित व्यक्तियों का कार्य के प्रति उदासीन होना एवं सभ्यता के गर्व में शिष्टाचार एवं समाज की मान्यताओं को भूलना मानव समाज आदि के निदान के लिये गाँधी के शिक्षा दर्शन एवं विचारों का अनुसारण करना होगा। गाँधी सादगी, संगम और सेवा का स्वावलम्बन की जिस पद्धति को विकसित करना चाहते थे वह मानव को सुख–शान्ति प्रदान करने वाली पद्धति हैं। अर्थात हमसे कोई गलती हो रही है। हमारी भूलों के फलस्वरूप ही यह समस्यायें हमें घेरे हुये हैं और इन सबके लिये एक मात्र उपाय शिक्षा में परिवर्तन करना अनिवार्य हो गया है और

ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

यह परिवर्तन गांधी की नीति के अनुसार ही होना चाहिये।

गाँधी की बुनियादी शिक्षा, प्रत्येक हाथ को काम, आत्मनिर्भरता, सच्चरित्रता एवं सदाचार की शिक्षा को समावेश आज के परिप्रेक्ष्य में क्यों आवश्यक है? गांधी जहाँ एक ओर महान शिक्षाविद् थे। जीवन का हर दृष्टि से अध्ययन करना विषय–वस्तु की सीमित सीमा के कारण असम्भव है। शैक्षिक दृष्टिकोण उनके चिन्तन का एक भाग है? शैक्षिक दृष्टिकोण उनके चिन्तन का एक भाग है। शैक्षिक विचारों को पूरी तरह से सम्मिलित करने का पूरा प्रयत्न किया गया है। गाँधी ने बालक को स्वावलम्बी बनाने पर जितना अधिक बल दिया उतना उसके किसी अन्य पक्ष में नहीं। उनके विचार से बालक को स्वावलम्बी होना चाहिए उनके द्वारा शिक्षा का मुख्य उद्देश्य यही होना चाहिए। उनकी स्वालम्बलन की शिक्षा को मौलिक विचारों का आज की शिक्षा में कहाँ तक आव यकता है इसको समाहित करने का प्रयास, उनकी शिक्षा नीतियों को उद्देश्य एवं विषय वस्तु की दृष्टि से आधुनिक शिक्षा का उनका प्रभाव एवं उनके परिणाम को इस लघु शोध अध्ययन की सीमा में बांधने का प्रयास किया गया है।